अध्याय पंचम

मातृ–देवी के विभिन्न नाम

ग्रामीणों और विद्वानों द्वारा मातृ–देवी को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे नग्नमाता, अतिति, रेनुका, एलम्मा, कोटवी, पृथ्वी देवी, नग्नकबंध, वेरुल, कमलामुखी, कमलागौरिमा, कमलगंगमा, आद्यशक्ति, मतांगी, शाकाम्भरी, उषा और इला आदि।

सर जान मार्शल के अनुसार पृथ्वी देवी या माता देवी सम्प्रदाय का सैन्धव संस्कृति में प्रमुख स्थान हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो आदि स्थलों से मिट्टी की बहुसंख्यक नारी मूर्तियाँ मिलती हैं। इन मूर्तियों के दोनों ओर दीपक जैसी आकृतियाँ बनी हैं जिनमें धुए के चिन्ह दिखाई देते हैं। मैके को भी कुछ ऐसी ही मूर्तियाँ मोहनजोदड़ो से मिली हैं जिन पर धूएँ के चिन्ह दिखायी देते हैं, सम्भव है कि देवी को प्रसन्न करने के लिए उसक सामने धूप आदि सुगन्धित द्रव्य जलाये जाते हों।[1] व्यंकटेश महोदय ने इन मूर्तियों की पहचान दक्षिणी भारत से प्राप्त दीप–लक्ष्मी की मूर्तियों से की है।[2] मार्शल ने इन मूर्तियों की पहचान पृथ्वी देवी से की है। अधिकांश विद्वान मिट्टी की बनी नारी मूर्तियों की पहचान माता देवी की मूर्ति से करते हैं। हड़प्पा की एक मुद्रा पर ऊपर की ओर पैर तथा नीचे की ओर सिर किये हुए एक नग्न नारी का चित्र है। देवी के पैर फैले हुए हैं तथा उनके गर्भ से एक पौधा निकल रहा है। भारत के बाहर मेसोपोटामिया मिश्र एशिया माइनर, सीरिया, फिलीस्तीन क्रीट आदि पुरास्थलों से भी बहुसंख्यक नारी मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं जो इस बात का प्रमाण है कि माता देवी की उपासना अत्यन्त प्राचीन काल से संसार के एक बड़े भाग में की जाती थी। वैदिक युग में पृथ्वी, अदिति, उषा आदि नामों से देवी को प्रतिष्ठित पाते हैं।

व्हीलर के अनुसार मातृ–देवी का सम्प्रदाय राजधर्म नहीं था वरन् यह एक पारिवारिक सम्प्रदाय था। हड़प्पा में पकी मिट्टी की स्त्री मूर्तिकाएँ भारी संख्या में मिली हैं। एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। यह सम्भवतः पृथ्वी देवी की प्रतिमा है और इसका निकट सम्बन्ध पौधे के जन्म और वृद्धि से रहा होगा इसलिए मालूम होता है कि हड़प्पाई लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और इसकी पूजा उसी तरह करते थे जिस तरह मिश्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस की पूजा करते थे। लेकिन हड़प्पाई लोक मिश्र वासियों की तरह मातृसत्तात्मक थे या नहीं इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। कुछ वैदिक सूक्तों में पृथ्वी माता की स्तुति है किन्तु उनको कोई प्रमुखता नहीं दी गयी है। सुदीर्ध काल के बाद ही हिन्दू धर्म में इस मातृ देवी को उच्च स्थान मिला है। ईसा की छठीं शदी और उसके बाद से ही दुर्गा, अम्बा, काली, चण्डी, आदि विविध मातृ–देवी को पुराणों और तन्त्रों में आराध्य देवियों का स्थान मिला। काल क्रमेण प्रत्येक गाँव की अपनी अलग–अलग देवी हो गयी। मातृ–देवी की पूजा हड़प्पा काल में आरम्भ हुई थी। बाद में चलकर इस देवी की पूजा शक्ति तथा उसके कल्याणकारी रूप में उमा, भवानी, अन्नपूर्णा आदि तथा पापनाशिनी रूप में काली, कराली, चामुंडी, चण्डी आदि के नाम से होने लगी।[3]

बहुत से स्थलों का नाम जहाँ से मातृ–देवी की प्रतिमा पायी गयी, देवी को एक ही नाम से उसका तात्पर्य लगाया गया। एल्लामा उदाहरणार्थ एल्लाला, एलेश्वरा एलापुरा, एलापुरी, एलामपुर और हैमलपुरी, देवी महत्वपूर्ण हो सकती है इसलिये कि इनका तात्पर्य देवी के नैसर्गिक प्रारूपों से है, जैसे ग्राम देवी, ग्राम देवता जिनकी प्रार्थना विशिष्टतया महिलाओं द्वारा की जाती थी। बच्चों और परिवार की भलाई के लिए इस प्रकार की ग्रामीण

देवियाँ ग्राम देवता के नाम से जानी जाती हैं, जिनका तात्पर्य उस स्थान की सुरक्षा से लगाया जाता है। चौथी शताब्दी ईस्वी तक शिव के साथ उसके स्थिर सम्बन्ध का तात्पर्य यह सिद्ध करता है कि मातृ–देवी स्तर में उठ गयी थी। वास्तव में बहुत अत्यधिक ग्राम देवता हैं और वे बहुधा जन के घड़े के साथ सम्बन्धित किये जाते हैं, जैसा कि अपनी प्रारम्भिक प्रतिमा में मातृ–देवी है जिनका घनिष्ठ सम्बन्ध प्रजनन की देवी के साथ है।[4] एक प्राचीन स्थल उत्पादन के पूजनीय केन्द्र जहाँ मातृ–देवी, देवी के रूप में आसीन थी। एलोरा स्थल से सम्बन्ध में यह रोचक है, जहाँ से छठवीं शताब्दी ईस्वी रामेश्वर मन्दिर के पहले विशिष्ट मातृ–देवी की प्रतिमा अस्तित्व में थी। मातृ–देवी की प्रतिमा के सन्दर्भ में भारतीय नामों को भाषायी विश्लेषण धेरे द्वारा अच्छी तरह से उल्लिखित किया गया है।[5] अपने अनुच्छेद नग्न देवी या लज्जा विहीन महिला मश्चिमी एशिया में भारत और दक्षिणी पूर्वी एशिया में सांकलिया ने मातृ–देवी के नाम की व्याख्या की जिसकी सूचना उन्हें स्व0 श्री सी0 चापगार की डायरी द्वारा दी गयी और उसका प्रयोग उत्तानपाद देवी के रूप में किया जैसे लज्जाविहीन महिला।[6] इस महिला में शर्म का कोई भाव नहीं है और न कोई विनम्रता है। संस्कृत में लज्जा का तात्पर्य लज्जा–विहीन नहीं होता, बल्कि यह लज्जा की जड़ से प्राप्त किया जाता है। इसका तात्पर्य लज्जालु से होता है।[7] इसका अर्थ होता है कि विनम्रता के भाव में शर्म या बन्धन। डी0सी0 सरकार ने लज्जाहीन गौरी की व्याख्या की है और वे निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उसका अर्थ होगा ''शर्मविहीन गौरी''।[8]

विष्णु पुराण के अनुसार लज्जा देवी विनम्र है जिसका मानवीकरण एक दक्ष की लड़की से किया जाता हैं लज्जा धर्म की पत्नी हो गयी और विनय नामक एक पुत्र की माँ। विनय एक अच्छे व्यवहार का मानवीकरण है। गौरी का तात्पर्य अतिविशिष्ट या स्वर्णिम

होता है, शिव या वरुण की पत्नी, संसार का स्रोत जल, देवी गाय, सृष्टि के पहले अभिन्न जल समुद्र और अन्नोत्पादक वर्षा उसी से प्रवाहित होती है। वह जीवनदायी जल और उत्पादकता का प्रमुख स्रोत है।[9]

पार्वती के रूप में गौरी शिव की पत्नी के रूप में है और गौरी देवियों के एक वर्ग का नाम है। गौरी की कुछ छः जातियाँ हैं जिसमें पृथ्वी, उमा, रम्भा, तोतला, त्रिपुरा और श्री हैं।[10] गौरी वह पहलू है जिसमें देवता श्री पर आध्यात्म चिन्तन करते हैं।[11] गौरी का प्रत्येक प्रारूप अपने उपासकों को भाग्य प्रदान करता है। गौरी का अनुवाद महिला से नहीं किया जा सकता चूँकि वह एक देवी है और देवी को सर्वदा नग्न रूप में प्रस्तुतीकरण नहीं किया जा सकता जैसा कि सांकालिया की उपाधि सुझाव देती है। सारे उदाहरणों को साथ में रखने पर मातृ–देवी के नाम का तात्पर्य शिव की पत्नी से ज्यादा निकट होता है।

महाकुटा की सिरविहीन कमलवत देवी की पारम्परिक व्याख्या सर्वप्रथम फ्लीट महोदय के द्वारा प्रकाशित की गयी थी।[12] इसकी कथा अथवा इसके कतिपय परिवर्तित रूप आज भी समाज में व्याप्त हैं। मूल रूप से यह पार्वती की कथा जिससे पार्वती की परीक्षा ली गयी जिससे क्षुब्ध होकर उन्होंने अपना सर या तो अपने कन्धों में छुपा लिया अथवा वे सिरविहीन हो गयीं। परम्पराके रूप में यह मूर्ति पार्वती के रूप में ली गयी है, जो घबड़ायी हुई, संकोची लज्जायुक्त है।[13]

आनध्र तेलगू क्षेत्र में दूसरी पारम्परिक व्याख्या बतायी जाती है, जहाँ इस तस्वीर का परिचय रेणुका के रूप में होता है। महाकाव्यों तथा पुराणों में रेणुका प्रसेनजित राजा की लड़की है और वह परशुराम की माता जमदग्नि ऋषि की पत्नी थी।[14] रेणुका प्रतिदिन स्वयं द्वारा निर्मित घड़े में तुंगभद्रा नदी से जल लाती थीं, एक दिन उसकी निगाह राजा और

रानी पर पड़ गयी जो कि नदी में स्नान कर रहे थे, इससे उसे व्यवधान उत्पन्न हुआ, उस दिन वह बर्तन में जल भरने में समर्थ न हुई और बिना जल के ही घर वापस पहुँची उसके पति ने क्रुद्ध होकर उसे मारने के लिये अपने पुत्र परशुराम को आदेश दिया। परशुराम ने पिता के कहने पर माता रेणुका का सर काट दिया और उसके सर के साथ एक परिया स्त्री का सर भी कट गया क्योंकि मरियम्मा, दक्षिण में परशुराम की माता का नाम मरियम्मा है, ने दुखी परिया स्त्री का आलिंगन कर लिया था। बाद में जब पिता ने परशुराम की माता को पुनर्जीवन देने की स्वीकृति दी तो परशुराम के भूल से सर अदल–बदल हो गया। मरियम्मा (परिया शरीर पर ब्राह्मण स्त्री का सर) बलिदान में भैस की अपेक्षा बकरे तथा मुर्गे को अधिक पसन्द करती थी और येलम्मा को (ब्राह्मण स्त्री के शरीर पर परिया स्त्री का सर) भैंस की बलि पसन्द थी। मरियम्मा शीतला (चेचक से सम्बन्धित देवी) थी। येलम्मा का अर्थ होता है ''सीमा की महिला'' ह्वाइटहैड का कथन है कि परिया शरीर पर ब्राह्मण सर शैव उपासना का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है, जबकि परिया सर वाला ब्राह्मण शरीर कोई प्राचीन द्रविड़ उपासना की परम्परा का संकेत करता है जिन पर ब्राह्मण धर्म विश्वास तथा सिद्धान्तों का प्रभाव भी पड़ा होगा। भैस की बलि जो परिया को प्रिय थी प्राचीन द्रविण परम्परा की द्योतक है।[15]

एक दूसरे सन्दर्भ में जमदग्नि ने परशुराम से कहा कि सिर का सम्बन्ध शरीर से नहीं हो सकता जैसे कि वह एक अपवित्र स्थल पर गिर पड़ा है। लेकिन उन्होंने वरदान दिया कि उसके सिर की पूजा हर वर्ग के पुरूषों द्वारा की जायेगी एल्लाम्मा के नाम से और उसके शरीर का उसी तरह से सम्मान मिलेगा भू–देवी के नाम से[16] एक दूसरे सन्दर्भ में पृथ्वी का जन्म रेणुका के रूप में एक अप्सरा से हुआ था।[17] शक्ति के रूप में रेणुका ही

पृथ्वी है। उसमें 101 शक्तियाँ समायोजित हैं और शिव की पत्नी बन बैठी। स्कन्दपुराण का कथानक है कि रेणुका अदिति का अवतार है।[18] रेनू का अनुवाद फूलों के स्तम्भ से किया जाता है या किसी चीज के धूल से या धूल की ऊपरी पर्त से।[19]

क्या मातृ–देवी वही देवी है जैसा कि वैदिक अदिति के विचार की धारणा फास्टर के दर्शन द्वारा जानना चाहिये। यद्यपि कलाकार मातृ–देवी के विचार और अदिति के विचार से अपरिचित रहे हों या हो सकता है कि वह भाग्य की देवी के रूप में या उत्पादन की देवी के रूप में प्रतिमा का निर्माण कर रहे थे जिनका नैसर्गिक नाम नहीं पता है देवी की प्रतिमाएँ आज अत्यधिक विस्तृत रूप से मातृ–देवी के रूप में जानी जाती है। वैदिक उल्लेखों में ईश्वर अदिति को माँ के रूप जैसा कि क्रामरिच ने विस्तार से प्रकाशित किया।[20] जोल ब्रिटोन द्वारा ऋग्वैदिक अदिति का अध्ययन कर एक मजबूत तर्क देते हैं कि अदिति का तात्पर्य अनभिग्य होता है और ऋग्वेद में अदिति का मानवीकरण अनभिग्यता की देवी के रूप में होता है।[21] ब्रिटोन व्याख्या करते हैं कि अदिति ऋग्वेद में अपने प्रारम्भिक अर्थ में अनभिग्यता की देवी थी। जबकि बाद के ऋग्वेद और अर्थववेद में इसका अर्थ मातृत्व में बदल जाता है और वह अनभिग्यता की आदर्श हो जाती है। अदिति असीमित अप्रभावित के भाव में है। यदि पाप का परिणाम रूकावट में होता है तो उसकी उत्पादकता स्वच्छन्द होती है। इसलिए कि वह अनभिग्य है बुने हुए कपड़े का सम्बन्ध मातृ–देवी के दोनों पैरों के बीच में जैसा कि नागनाथ उद्धरणों में दिखायी पड़ा और बहुत से अन्यों में जो कि दोनों छोर पर स्वतन्त्र छूटे थे। इसका सम्बन्ध इस देवी के विचारों से हो सकता है जैसे कि असीमित या स्वच्छन्द।[22] एम0सी0पी0 श्रीवास्तव लिखते हैं कि बाद के हिन्दुओं द्वारा अदिति लगभग भूली जा चुकी है, और इनकी आराधना भी नहीं होती और सम्भवतया कोई

प्रतिमा भी नहीं मिलती है। इसलिये कि कोई सुस्पष्ट प्रतिमा का प्रारूप स्पष्ट नहीं था और कोई भी सुस्पष्ट भूगोली वातावरण भी नहीं था। विशिष्ट मातृत्व देवी की धारणा प्राचीन स्तर पर थी। जैसा कि अदिति द्वारा ऋग्वेद में संकलित की गयी है। यह उल्लेखनीय है कि बाद के बहुसंख्यक हिन्दू भू–भाग में जब धारणा व्याप्त हुई तब अदिति स्वयं उस स्थिति को नहीं प्राप्त कर सकी।[23]

वैदिक देवी अदिति असीमित है जिनका परिचय ऋग्वेद में पृथ्वी और प्रकृति के रूप में किया गया।[24] गोण्डा ने देवी अदिति के नाम का तात्पर्य स्वतन्त्रता से लगाया और उसके स्वभाव का समायोजन इस वातावरण के जीवन के फैलाव से लगाया।[25] ऋग्वेद 1,8,9,10, घोषणा करता है कि जो कुछ भी है वह वही है और उससे भी ज्यादा उसी में सभी देवता आते हैं उसका जन्म दक्ष से हुआ था। देवी अदिति ऋग्वेद में सूर्य आदि तैतीस देवताओं की माता कहलाती हैं।[26]

प्रकृति	पृथ्वी	दक्ष (प्रजापति की कन्या और कश्यप ऋषि की पत्नी)
असीमता	निर्धनता	स्वतन्त्रता
सुरक्षा	पूर्णता	पुनर्वास नक्षत्र
गाय	वाणी	उत्पन्न करने की शक्ति
दूध	माता	द्यूलोक
अन्तरिक्ष		

ऋग्वेद में 80 बार अदिति देवी का उल्लेख है। आर्य लोग अदिति को मानते थे। वे अदिति को मित्र, वरुण, रूद्र, आदित्य इन्द्र आदि की माता मानते थे। ''अदिति ने सौरीधर में ही इन्द्र को स्तनपान कराने के पहले सोमरस पिलाया था'' अदिति को

सर्वशक्तिमती मानकर कहीं उन्हें आठ बसुओं की पुत्री और कही आदित्यों की भगिनी भी कहा गया है। अदिति शब्द से ही आदित्य शब्द बना है। ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के सूक्त 100 मंत्र एक में अदिति को सर्वतातिम सर्वाग्राहिणी कहा गया हैं अदिति शब्द का अर्थ ही है बन्धनमुक्त स्वाधीन अदिति को विश्वजन्या (7–10–4) अर्थात् विश्वहितैषिणी कहा गया है। 1–89, 10 में कहा गया है अदिति आकाश, अंतरिक्ष, माता, पिता, पुत्र और समस्त देव है। अदिति पन्चजन्य (गन्धर्व, पितर देव असुर और राक्षस) है। अदिति जन्म और जन्म का कारण है। अदिति पापों से बचाने वाली देवी भी थी। ऋग्वेद 10–72–5 में अदिति को दक्ष की पुत्री कहा गया है।

अदिति के साथ दिति का ऋग्वेद में केवल तीन ही बार उल्लेख है। पुराणों में दिति को दैत्यों की माता कहा गया है परन्तु ऋग्वेद में दिति सर्वत्र देवी ही मानी गयी हैं, दैत्य माता नहीं।

अदिति एहिक उर्जा की प्रस्तुतीकरण करती है। अदितियास उसका सातवाँ या आठवाँ पुत्र है (ऋग्वेद X, 72) जो कि एक साथ सम्पूर्ण आन्तरिक्ष का प्रस्तुतीकरण करता है, अदिति राजाओं की माँ है, अति विशिष्ट पुत्रों की माँ है। विशिष्टतया ईश्वरों के मित्र और वरुण मोनियर विलियम्स पारिभाषित करते हैं कि अदिति जिसे बाँधा न जा सके। स्वतन्त्र असीमित निर्भिग्न सम्पूर्ण अतुलनीय खुशहाल असीमित अपरिमेय पर्याप्त संरचनात्मक शक्ति ऋग्वेद में वह पापहीन है। ऐसी जो पाप को दूर करती है।[27] पृथ्वी के केन्द्र से वह ऐसी है जो सम्पत्ति को समायोजित करती है, वह देदिप्यमान बहुमूल्य अतिविशिष्ट पृथ्वी अदिति की गोद है।

जैसा कि धेरे का सुझाव है कि अदिति के बारे में प्रयोग होने वाले विचार मातृ–देवी की प्रतिमा की तरह प्रतीत होते हैं।[28] ये प्रतिमायें दूसरी से बारहवीं शताब्दी ईस्वी के बीच बनायी गयी जो कि बहुत तीव्र गति से सैवित समितियों द्वारा बनायी गयी और उसे गौरी के रूप में पुनः परिभाषित भी किया गया।

प्राचीनता के सम्भाव्य भाव में गौरी का नाम सही है इसलिये कि इसके साथ पूर्णकुम्भ बैलों और देवताओं के जोड़े सम्मिलित हैं उसकी प्रतिमायें कमल के तालाबों के बगल रखी गयी या झरनों के बगल शिव मन्दिर के साथ उसे सम्मिलित किया गया और पाट्टाडकल उद्धरण जो कि गौरी की व्याख्या कमलवत बर्तन के साथ करती हुई प्रतीत होती है हरि या शिव की पत्नी के रूप में। लज्जा सम्भाव्यता विस्तृतात्मक पहलू है जिसे बहुत पुरातन समय के साथ नहीं जोड़ा गया बल्कि उसे नैसर्गिक खोये हुए अर्थ को इस देवी के विशिष्ट प्रारूप को कमल के साथ समायोजित करके स्थापित किया गया उसका महत्व सृजनात्मक शक्ति की देवी की भूमिका के रूप में निहित है, जो कमल के प्रारम्भिक प्रतीकात्मक सम्बन्धों के साथ उसका उत्तानपाद मुद्रा उसी पूर्णकुम्भा प्राचीनता और उसके कमलवत सर इसी अर्थ की तरफ सुझाव देते हैं।

नोट्स

1. मैके जर्नल आफ रायल सोसायटी आफ आर्ट लन्दन, पृष्ठ 218।
2. वेंकटेश–कल्चरल हेरिटेज III, पृष्ठ 80।
3. देखें यन0सी0 इ0 आर0टी : रामशरण शर्मा हड़प्पा संस्कृति कांस्य युग।
4. स्टटली ऐण्ड स्टटली, 1977, 104।
5. धेरे 1978।

6. संकालिया, 1960।

7. मोनियर–विलियम्स, 1976, 895।

8. डी0सी0 सरकार, 1980।

9. स्टटली ऐण्ड स्टटली, 1 1977, 96।

10. बनर्जीया 1974, 502।

11. स्टटली ऐण्ड स्टटली, 1977।

12. फ्लीट, 1981।

13. रमेजन, 1969, 35।

14. ब्राबकर, 1978, रमेजन, 1969, जयकार, 1981, 31–33।

15. देखें प्राचीन भारत का इतिहास सम्पादक द्विजेन्द्र नारायण झॉ और कृष्ण मोहन श्रीमाली, प्रोफेसर इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, अध्याय 10, सुदूर दक्षिण में प्रारम्भिक इतिहास की रूपरेखा, पृष्ठ 272 (गोविन्द प्रसाद उपाध्यायः बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)

16. रमेजन, 1969, 36।

17. इल्मोर, 1925, 78–79।

18. ऋग्वेद 1, 14, 17।

19. मोनियर–विलियम्स, 1976, 887

20. क्रामरिच, 1956, ऐण्ड 1975, सी आल्सो पी0के0 अग्रवाल, 1983 : 56–60।

21. जोल ब्रिटोन, 1981।

22. पी0 पाल हैज सजेस्टेड दैट दिस क्लाथ इज यूज्ड बाइ विलेजर्स ऐज ऐन ऐड टू वर्थ।

23. यम0सी0पी0 श्रीवास्तवा, 1979, 41।

24. एफ0 मैक्स मुलर, इड वेडिक हीमन्स, साक्रेड बुक्स आफ द इस्ट वालूम, 32, 1962–66, आर0पी0टी0 आफ 1979–1910 एडिशन, 248 एफ एफ।

25. गोण्डा, 1970, 7।

26. मोनियर–विलियम्स, 1976, 18।

27. ऋग्वेद IX. 71, 5, IX, 74, 5, VII, 88.7, 10, 70.6–7।

28. रिव्यू समरी इन इंग्लिश बाय धवालकर, 1979–80।